परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

❋ जन्मदिवस 19–03–1971 ❋ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❋ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

रूप जो बदला नहीं जाता

सम्पादक

ब्रह्मचारी धर्मचन्द शास्त्री

प्रकाशक

आचार्यश्री धर्मश्रुत ग्रन्थमाला

दिल्ली

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

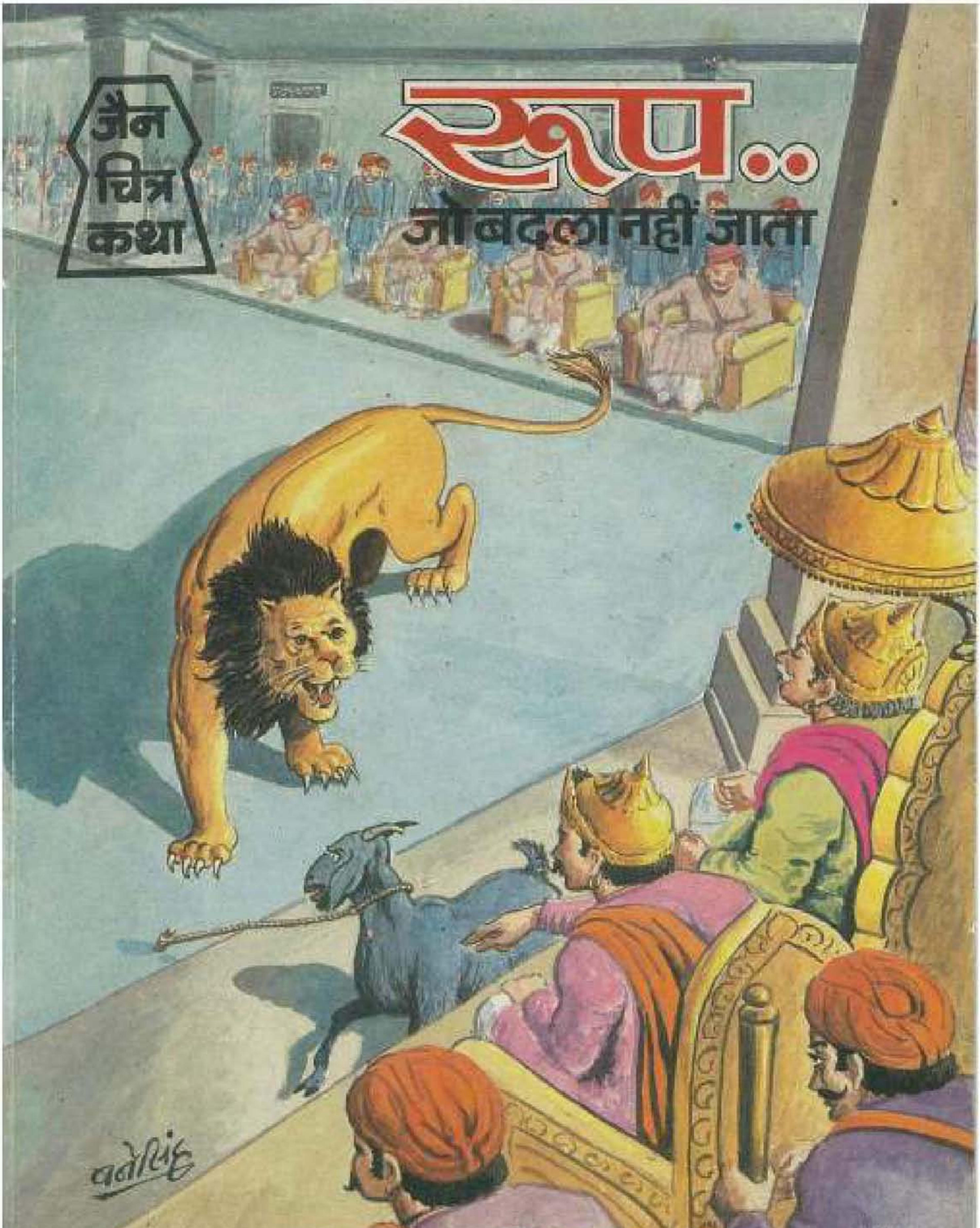
जैन चित्र कथा
रूप..
जो बदला नहीं जाता
बनेसिंह

परम संरक्षक

श्री उम्मेदमल पाण्ड्या

श्री कवरीलाल बोहरा आनन्दपुर कालू (राजस्थान)

ब्रह्मगुलाल के पिता का नाम था हल। महाराज की उन पर विशेष कृपा थी। उनका विवाह भी महाराज ने ही कराया था। अत: जब ब्रह्मगुलाल का जन्म हुआ तो महाराज के सहयोग से उनका जन्मोत्सव बड़े ठाठ-बाट से मनाया गया। किसी प्रकार की भी कोई कमी नहीं रही।
रूप..
जो बदला नहीं जाता
चित्रांकन: बनेसिंह
बालक ब्रह्मगुलाल बढ़ता गया - पाठशाला जाने लगा खूब मन लगाकर पढ़ता। एक दिन ...
कितना होनहार है यह बालक ब्रह्मगुलाल। पाठशाला में आज इसने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। बच्चों तुम भी इसी प्रकार मन लगाकर पढ़ा करो।
और बेटा ब्रह्मगुलाल हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। तुम जीवन में फलो फूलो और इसी प्रकार अपने आत्म-कल्याण में भी सबसे आगे रहो।

दिन बीतते गये - बड़ा चतुर योग्य व विद्वान था ज्योतिष का भी अच्छा जानकार था। साहित्य का भी पंडित था। और सबसे बड़ी बात अध्यात्म का भी ज्ञान प्राप्त किया उसने। एक दिन विवाह - सूत्र में उसे बांध दिया गया।

भरपूर जवानी, इकलौता पुत्र, घर में कमी नहीं, साथ में पूरी स्वतन्त्रता, राजा की भी कृपा, जो चाहता करता, कोई मना नहीं करता। मथुरामल से उसकी मित्रता हो गई। एक दिन...
भई, मेरा मन चाहता है कि बहुरूपिया बनूं। कभी कुछ, कभी कुछ रूप बनाऊं और लोग देखें तो दंग रह जायें, देखते ही रह जायें। तुम्हारी क्या राय है?
विचार तो बुरा नहीं है। अपना मनोरंजन भी हो जाया करेगा और लोगों की प्रशंसा भी मिलेगी।

बस ब्रह्मगुलाल बन गया बहुरूपिया। साथ दिया मथुरामल ने। एक दिन बन कर आया 'अर्धनारीश्वर'। लोगों ने देखा और ...
कमाल है! कैसा आकर्षक रूप - ब्रह्मगुलाल के क्या कहने। अद्‌भुत कलाकार है यह! ऐसा रूप क्या कोई रख सकता है। कोई भी तो नहीं पहिचान सकता इसे।

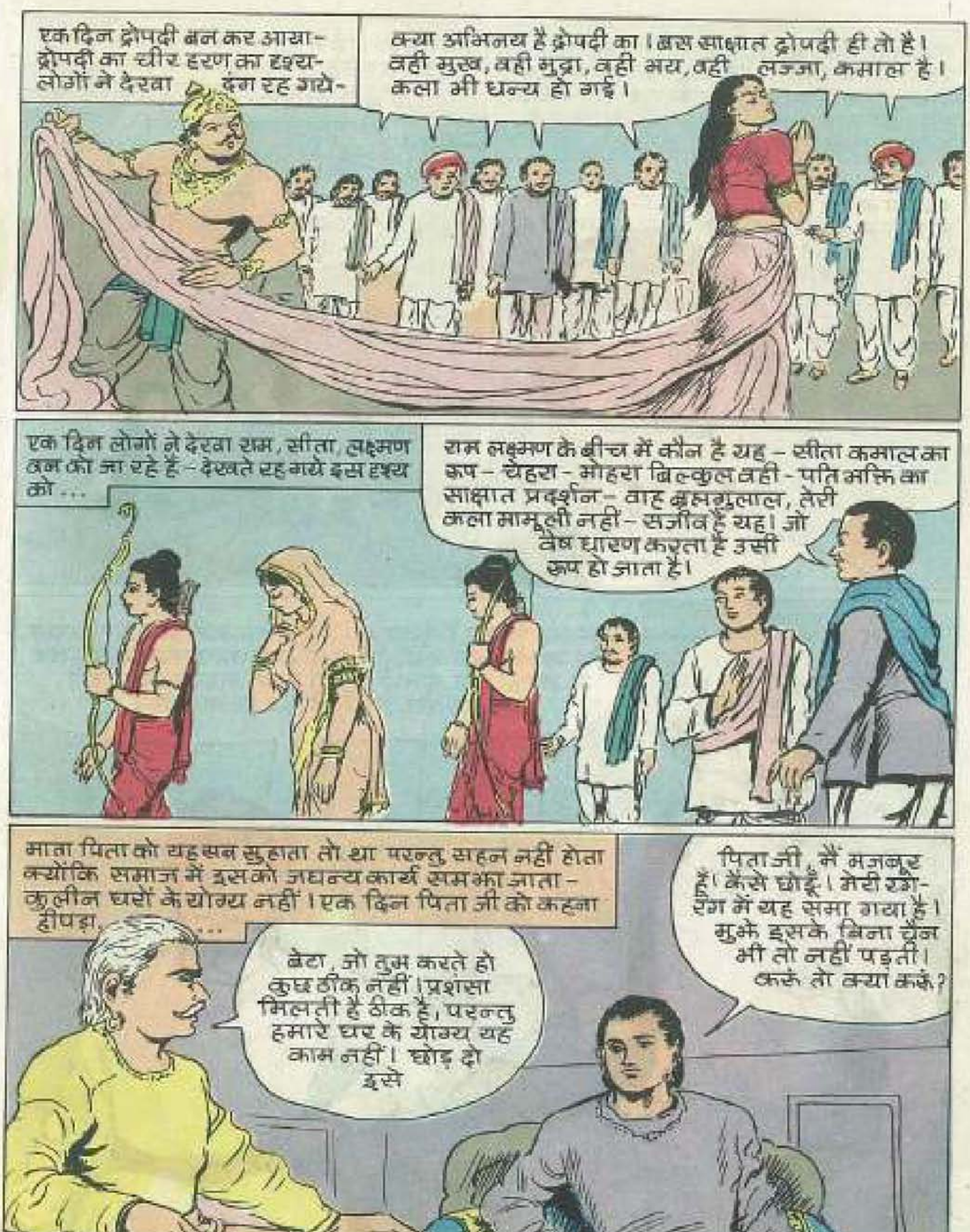
एक दिन द्रोपदी बन कर आया - द्रोपदी का चीर हरण का दृश्य - लोगों ने देखा दंग रह गये -
क्या अभिनय है द्रोपदी का। बस साक्षात द्रोपदी ही तो है। वही मुख, वही मुद्रा, वही भय, वही लज्जा, कमाल है। कला भी धन्य हो गई।
एक दिन लोगों ने देखा राम, सीता, लक्ष्मण वन को जा रहे हैं - देखते रह गये इस दृश्य को ...
राम लक्ष्मण के बीच में कौन है यह - सीता कमाल का रूप - चेहरा - मोहरा बिल्कुल वही - पति भक्ति का साक्षात प्रदर्शन - वाह ब्रजगुलाल, तेरी कला मामूली नहीं - सजीव है यह। जो वेष धारण करता है उसी रूप हो जाता है।
माता पिता को यह सब सुहाता तो था परन्तु सहन नहीं होता क्योंकि समाज में इसको जघन्य कार्य समझा जाता - कुलीन घरों के योग्य नहीं। एक दिन पिता जी को कहना ही पड़ा...
बेटा, जो तुम करते हो कुछ ठीक नहीं। प्रशंसा मिलती है ठीक है, परन्तु हमारे घर के योग्य यह काम नहीं। छोड़ दो इसे
पिता जी, मैं मजबूर हूँ। कैसे छोड़ूँ। मेरी रग-रग में यह समा गया है। मुझे इसके बिना चैन भी तो नहीं पड़ती। करूं तो क्या करूं?

सभी कुछ मिला बहुरूपलाल को – नाम, यश, प्रशंसा, धन, दौलत। ज्यूं ज्यूं नाम मिला कला निखरती गई। परन्तु उसका यश सब के गले तले नहीं उतर सका। कुछ उससे जलने लगे, उनमें थे राजा के मंत्री जी। एक दिन...
बहुरूपलाल, बहुरूपलाल, जिधर देखो उसी का नाम। महाराज भी तो उसी के गीत गाने लगे हैं हरदम-हरसमय उस ही की प्रशंसा, उसी की ही तारीफ। इस तरह तो हमें कोई भी नहीं पूछेगा। कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा अब तो।
अवसर की टोह में रहने लगे मंत्री जी। एक दिन वह बैठे थे राजकुमार के पास कि...
मंत्री जी देखा आपने-बहुरूपलाल कमाल का रूप बनाता है। वह जो रूप बनाता है, उसी रूप वह उस समय बन जाता है। वह क्या है इस बात को बिल्कुल भूल जाता है।
ठीक है, परन्तु...
परन्तु क्या, मंत्री जी
यह सब धोखा है कुंवर जी। हम तो तब माने जब आप उससे शेर का वेष बनवायें, तब देखें क्या वह उस समय वास्तव में शेर ही बन जाता है, क्या उसमें शेरत्व आ जाता है, क्या वह शेर जैसा ही क्रूर हो जाता है ?

बात तो आपने ठीक कही मंत्री जी। हम कल ही उसे शेर का रूप धरने के लिये कहेंगे।
ठीक है कुंवर साहब, जैसा आप उचित समझें।
बस अब काम बन गया। सांप भी मर जायेगा और लाठी भी न टूटेगी। शेर का रूप वह बना न सकेगा और उसकी सारी कीर्ति मिट्टी में मिल जायेगी।
अगले दिन - राजदरबार में राजा, मंत्री, राजकुमार आदि सभी बैठे हैं...
ब्रह्मगुलाल, तुमने तो कमाल कर रखा है। चारों ओर तुम्हारा ही नाम। बच्चे क्या, बड़े, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी तो तुम्हारी कला पर मुग्ध हैं। हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं।
राजन, मैं किस योग्य हूँ। आपकी ही तो कृपा है, आपका ही तो आशीर्वाद है। जो कुछ भी आज मैं हूँ सब आपकी बदौलत।
राजदरबार में ही...
पिता जी! वाकई ब्रह्मगुलाल की कला कमाल की है। आज तो मेरी इच्छा है कि हम ब्रह्मगुलाल को शेर के रूप में देखें
बेटा, जैसी तुम्हारी इच्छा

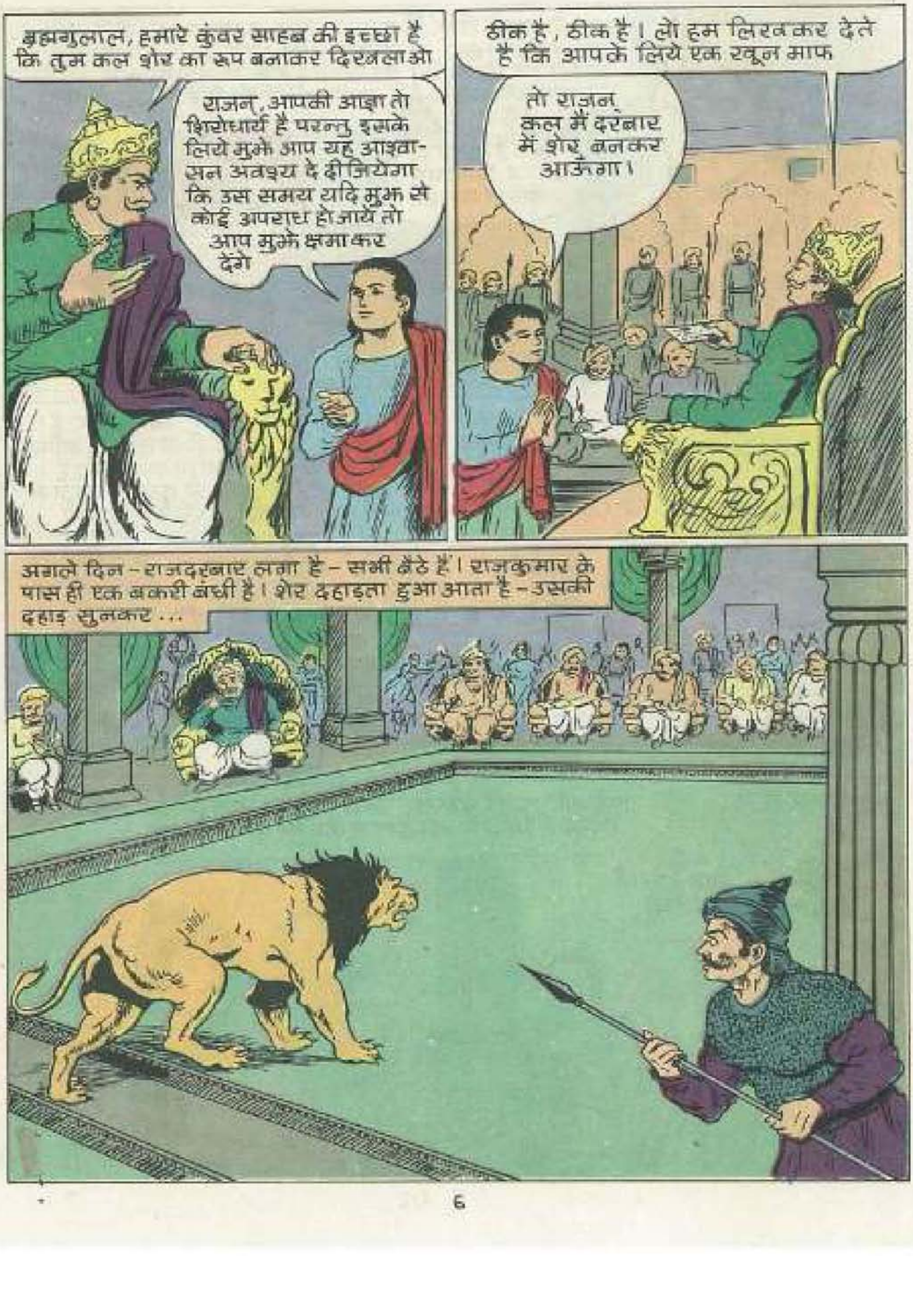
झमगुलाल, हमारे कुंवर साहब की इच्छा है कि तुम कल शेर का रूप बनाकर दिखलाओ
राजन्, आपकी आज्ञा तो शिरोधार्य है परन्तु इसके लिये मुझे आप यह आश्वासन अवश्य दे दीजियेगा कि उस समय यदि मुझ से कोई अपराध हो जाये तो आप मुझे क्षमा कर देंगे
ठीक है, ठीक है। लो हम लिखकर देते हैं कि आपके लिये एक खून माफ
तो राजन् कल मैं दरबार में शेर बनकर आऊँगा।
अगले दिन – राजदरबार लगा है – सभी बैठे हैं। राजकुमार के पास ही एक बकरी बंधी है। शेर दहाड़ता हुआ आता है – उसकी दहाड़ सुनकर ...

कमाल कर दिया ब्रहमगुलाल। धन्य हो तुम - अगर हमें पता न होता तो शायद हममें से एक दो के प्राण पखेरू ही उड़ जाते। कैसी भयंकर गर्जना हमने ऐसा कलाकार आजतक नहीं देखा
शेर की निगाह पड़ी बकरी पर जो राजकुमार के पास बंधी थी। सोचा शेर ने...
ओह यह धोखा, यह चाल। अगर बकरी को छोड़ता हूँ तो मेरी बदनामी होती है, कला कलंकित होती है। यदि मारता हूँ तो संकल्पी हिंसा - पाप - महापाप - अपने जैनत्व को, अपनी मान्यता को, अपने धर्म को बरबाद करता हूँ। करूँ तो क्या करूँ?

इतने में राजकुमार ने एक कंकड़ फेंक कर मारी शेर पर और उसे ललकारा...
अरे तुम शेर हो या गीदड़! बकरी सामने बंधी है और तुम शांत खड़े हो - यही है तुम्हारा शेरत्व - धिक्कार है तुम्हारी जिन्दगी को - व्यर्थ ही तुम्हारी माता ने तुम्हें जन्म दिया -

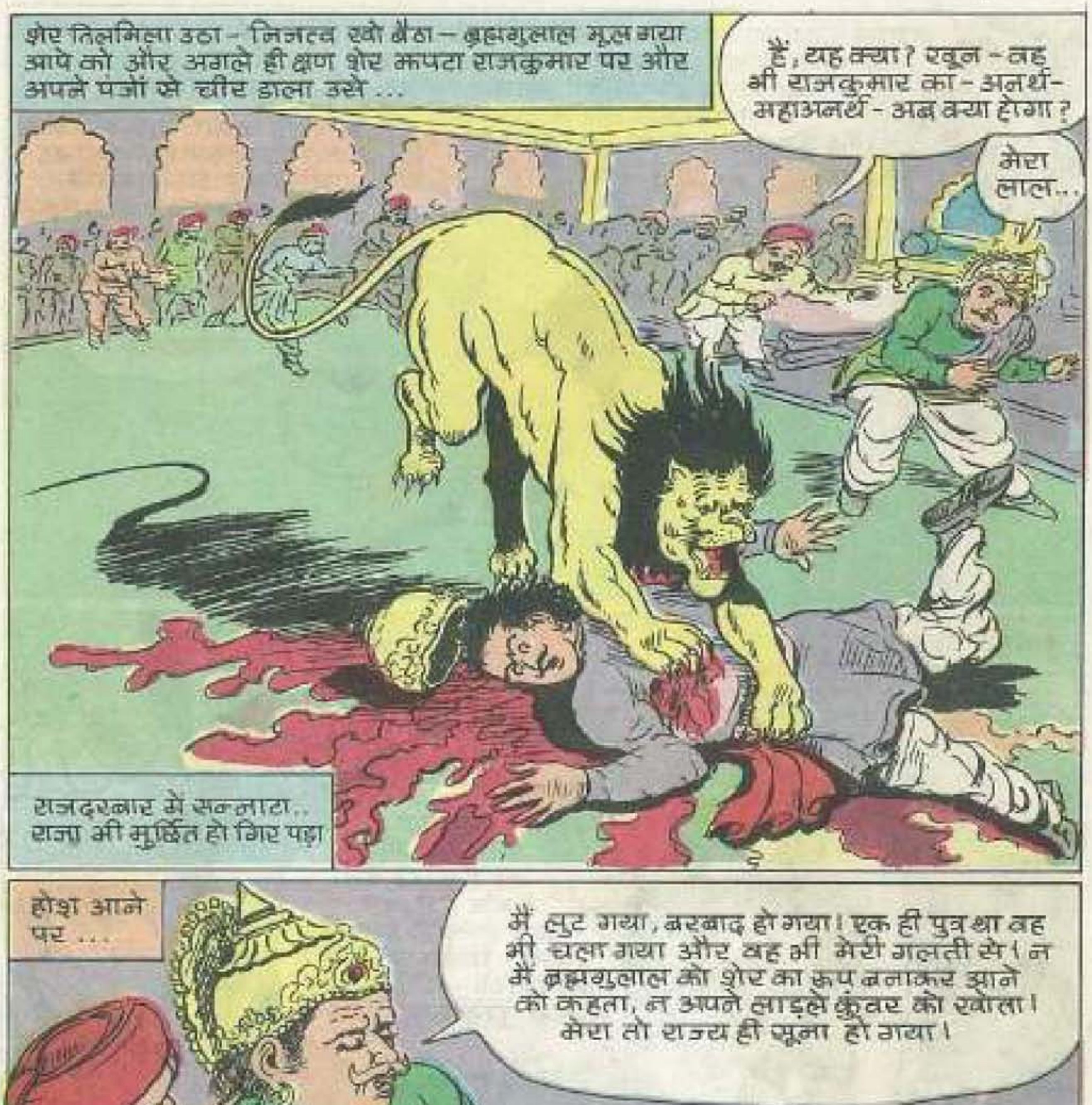
शेर तिलमिला उठा – नियंत्रण खो बैठा – झुमरूलाल भूल गया आपे को और अगले ही क्षण शेर झपटा राजकुमार पर और अपने पंजों से चीर डाला उसे ...
हैं, यह क्या? खून – वह भी राजकुमार का – अनर्थ – महाअनर्थ – अब क्या होगा?
मेरा लाल...
राजदरबार में सन्नाटा.. राजा भी मूर्छित हो गिर पड़ा
होश आने पर ....
मैं लुट गया, बरबाद हो गया। एक ही पुत्र था वह भी चला गया और वह भी मेरी गलती से। न मैं झुमरूलाल को शेर का रूप बनाकर आने को कहता, न अपने लाड़ले कुंवर को खोता। मेरा तो राज्य ही सूना हो गया।
राजन, शांत होईये। जो होना था हो गया, रोने धोने से जाने वाला वापिस थोड़े ही आ जायेगा। क्या किया जाये कुछ समझ में नहीं आता।

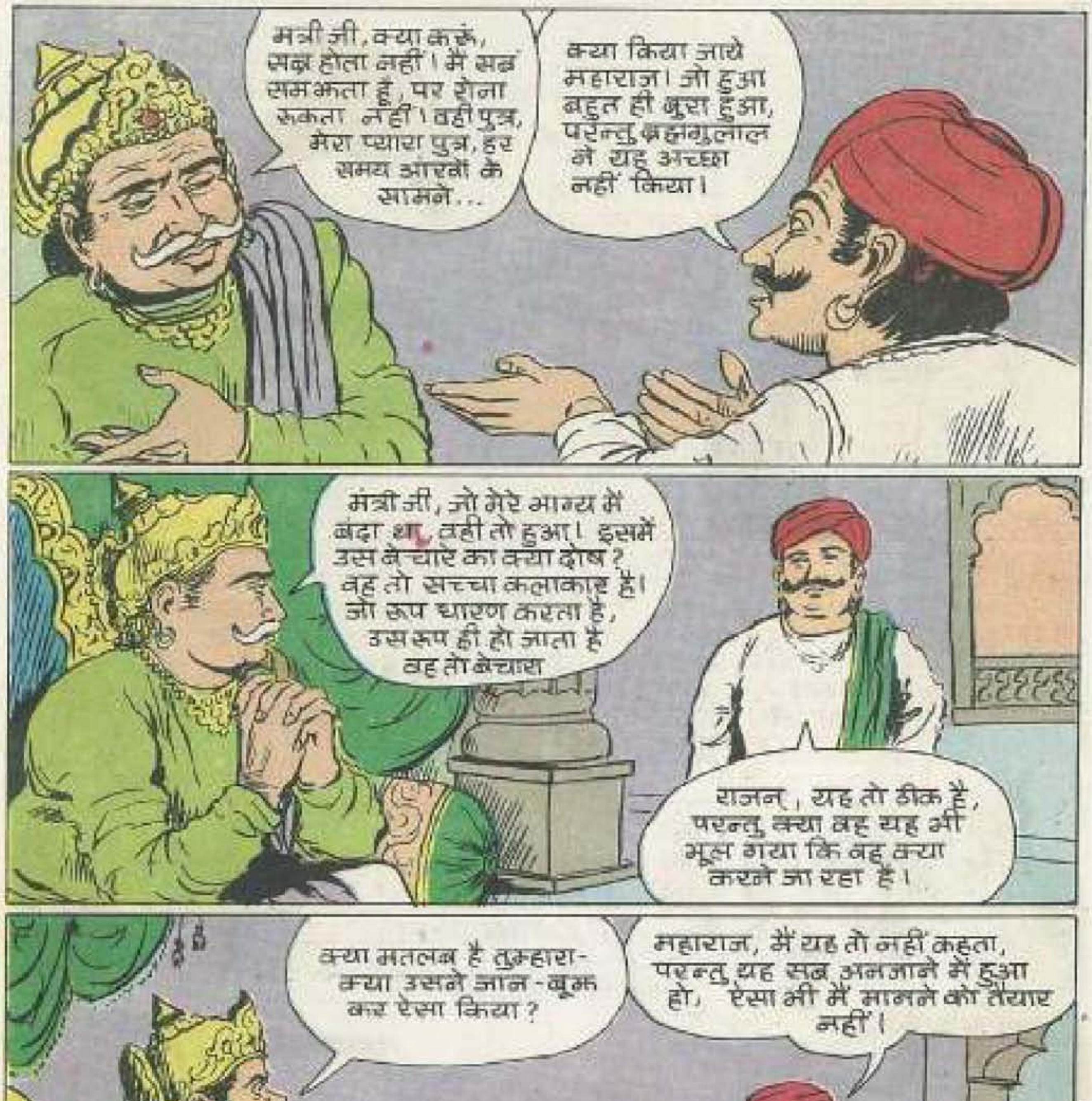
मंत्री जी, क्या करूं, सब होता नहीं। मैं सब समझता हूं, पर रोना रुकता नहीं। वही पुत्र, मेरा प्यारा पुत्र, हर समय आंखों के सामने...
क्या किया जाये महाराज। जो हुआ बहुत ही बुरा हुआ, परन्तु ने यह अच्छा नहीं किया।
मंत्री जी, जो मेरे भाग्य में बदा था, वही तो हुआ। इसमें उस बेचारे का क्या दोष? वह तो सच्चा कलाकार है। जो रूप धारण करता है, उस रूप ही हो जाता है वह तो बेचारा
राजन, यह तो ठीक है, परन्तु क्या वह यह भी भूल गया कि वह क्या करने जा रहा है।
क्या मतलब है तुम्हारा- क्या उसने जान-बूझ कर ऐसा किया?
महाराज, मैं यह तो नहीं कहता, परन्तु यह सब अनजाने में हुआ हो, ऐसा भी मैं मानने को तैयार नहीं।

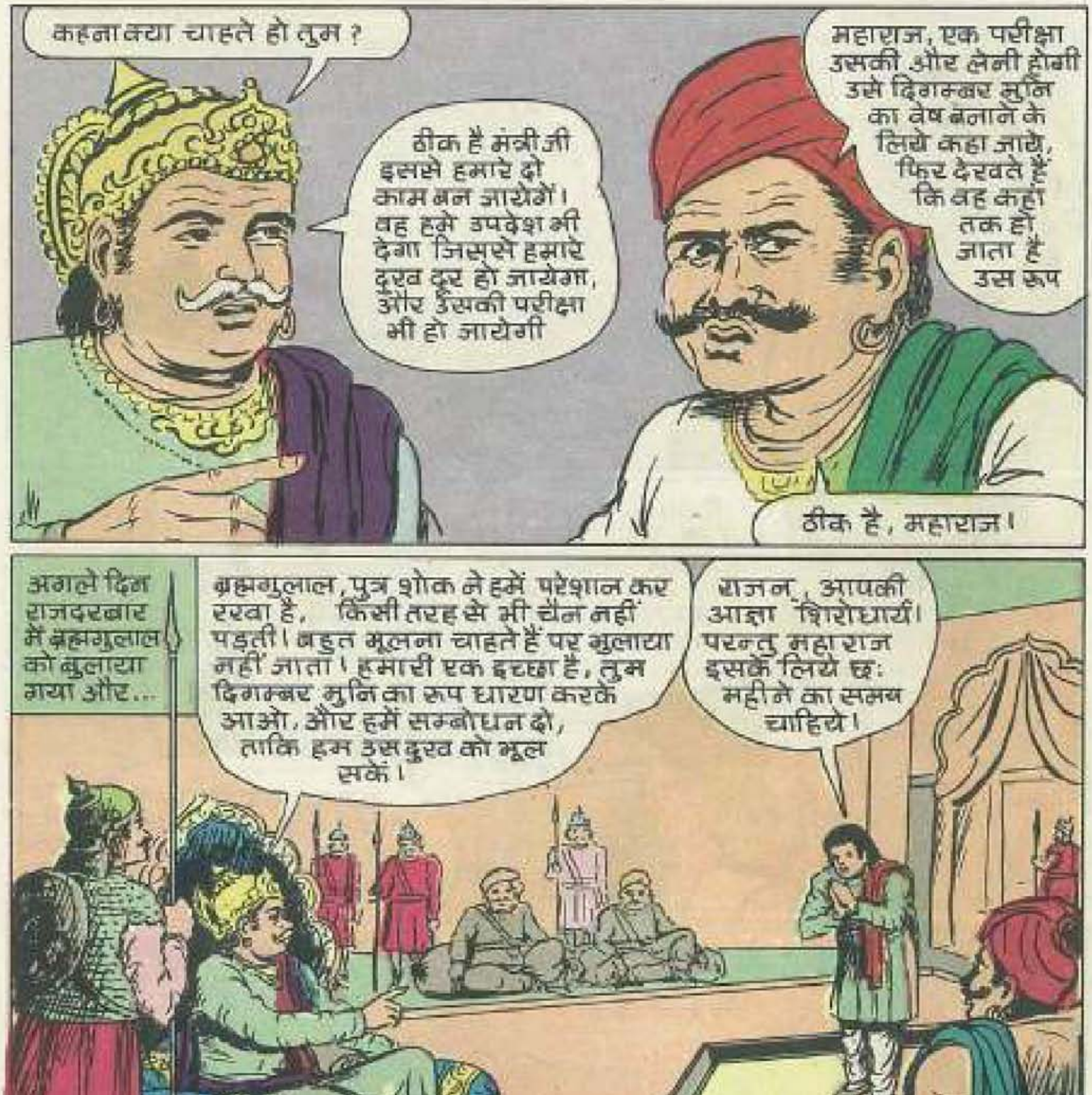

कहना क्या चाहते हो तुम ?
महाराज, एक परीक्षा उसकी और लेनी होगी उसे दिगम्बर मुनि का वेष बनाने के लिये कहा जाये, फिर देखते हैं कि वह कहाँ तक हो जाता है उस रूप
ठीक है मंत्रीजी इससे हमारे दो काम बन जायेगें। वह हमें उपदेश भी देगा जिससे हमारे दुख दूर हो जायेगा, और उसकी परीक्षा भी हो जायेगी
ठीक है, महाराज।
अगले दिन राजदरबार में ब्रह्मगुलाल को बुलाया गया और...
ब्रह्मगुलाल, पुत्र शोक ने हमें परेशान कर रखा है, किसी तरह से भी चैन नहीं पड़ती। बहुत भूलना चाहते हैं पर भुलाया नहीं जाता। हमारी एक इच्छा है, तुम दिगम्बर मुनि का रूप धारण करके आओ, और हमें सम्बोधन दो, ताकि हम उस दुख को भूल सकें।
राजन, आपकी आज्ञा शिरोधार्य। परन्तु महाराज इसके लिये छः महीने का समय चाहिये।
अच्छा, तुमको समय दिया जाता है।

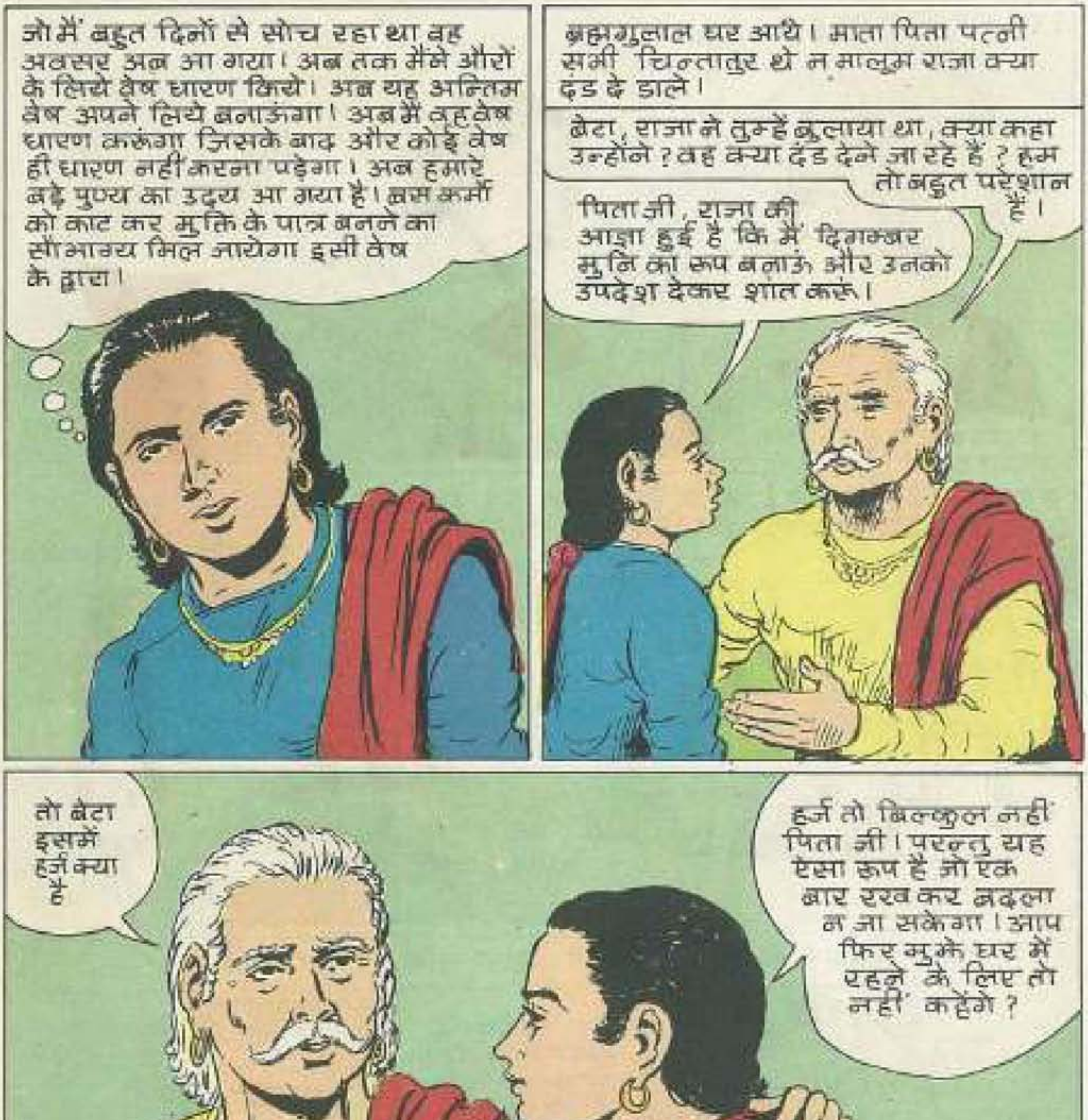
जो मैं बहुत दिनों से सोच रहा था वह अवसर अब आ गया। अब तक मैंने औरों के लिये वेष धारण किये। अब यह अन्तिम वेष अपने लिये बनाऊंगा। अब मैं वह वेष धारण करूंगा जिसके बाद और कोई वेष ही धारण नहीं करना पड़ेगा। अब हमारे बड़े पुण्य का उदय आ गया है। बस कर्मों को काट कर मुक्ति के पात्र बनने का सौभाग्य मिल जायेगा इसी वेष के द्वारा।
ब्रह्मगुलाल घर आये। माता पिता पत्नी सभी चिन्तातुर थे न मालुम राजा क्या दंड दे डाले।
बेटा, राजा ने तुम्हें बुलाया था, क्या कहा उन्होंने? वह क्या दंड देने जा रहे हैं? हम तो बहुत परेशान हैं।
पिता जी, राजा की आज्ञा हुई है कि मैं दिगम्बर मुनि का रूप बनाऊं और उनको उपदेश देकर शांत करूं।
तो बेटा इसमें हर्ज क्या है
हर्ज तो बिल्कुल नहीं पिता जी। परन्तु यह ऐसा रूप है जो एक बार रख कर बदला न जा सकेगा। आप फिर मुझे घर में रहने के लिए तो नहीं कहेंगे?

क्या कहा ?
हाँ पिताजी, मुनि का रूप धारण करने के बाद उसमें दूषण न लगा सकूंगा। इस रूप को तो इन्द्र अहमिन्द्र भी तरसते हैं फिर क्या ऐसे रूप को रखकर छोड़ा जा सकता है नहीं कदापि नहीं
अच्छा बेटा कल बतायेंगे
क्या कहता है मेरा लाल
कहता है, मुनि का वेष बनाऊंगा और फिर कभी घर में न रहूंगा
नहीं नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। मैं कभी भी उसे मुनि नहीं बनने दूंगी
ज़रा ठंडे दिल से सोचो, ऐसा कहना उसका बचपना ही तो है। मुनि बनना कोई हंसी खेल तो है नहीं। बड़ा कठिन मार्ग है यह। मुनि बन जाने दो, दो चार दिन बाद ही लौट कर घर आ जायेगा चिन्ता न करो

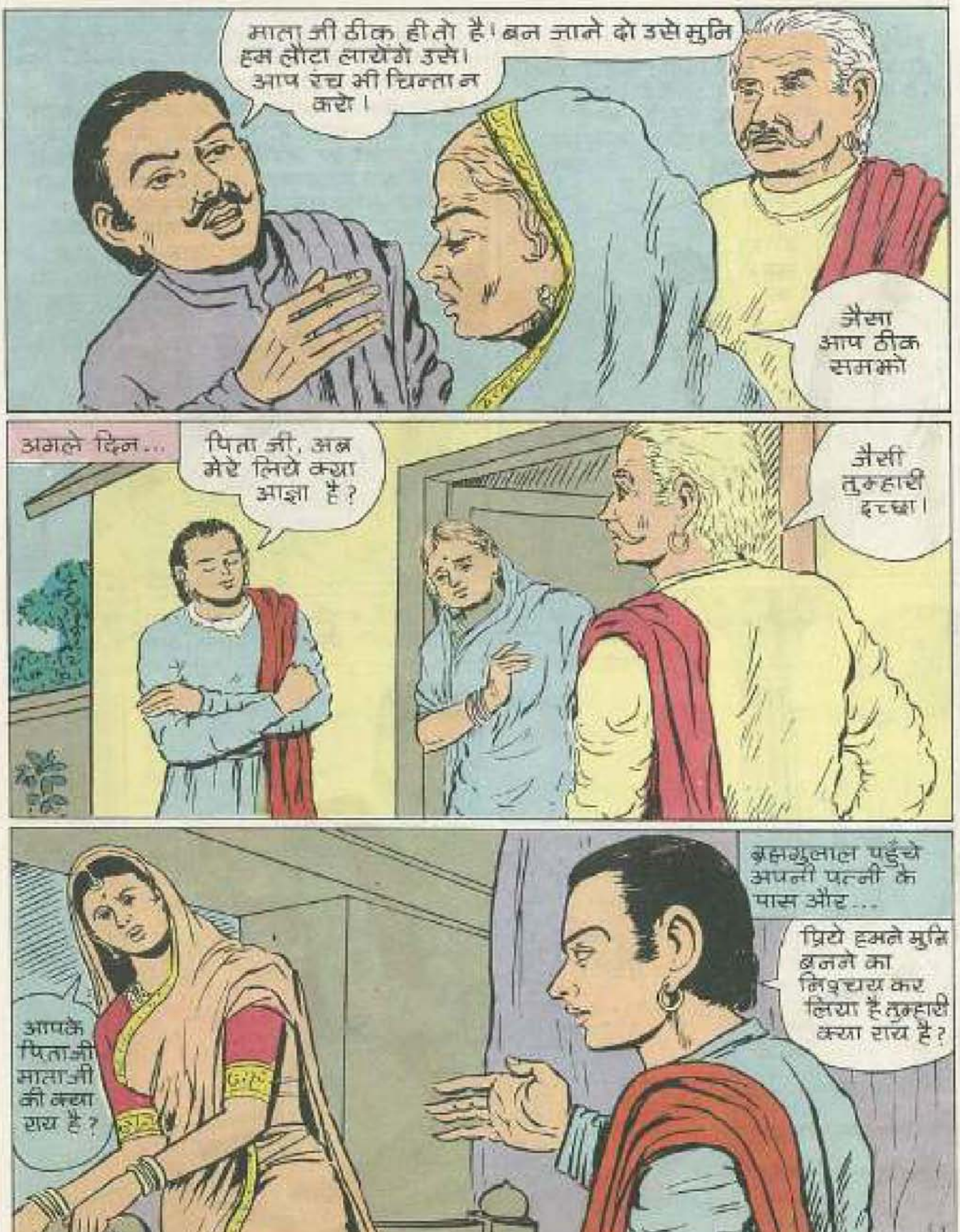
माता जी ठीक ही तो है। बन जाने दो उसे मुनि हम लौटा लायेंगे उसे। आप रंच भी चिन्ता न करो।
जैसा आप ठीक समझो
अगले दिन...
पिता जी, अब मेरे लिये क्या आज्ञा है?
जैसी तुम्हारी इच्छा।
ब्रह्मगुलाल पहुँचे अपनी पत्नी के पास और...
प्रिये हमने मुनि बनने का निश्चय कर लिया है तुम्हारी क्या राय है?
आपके पिताजी माताजी की क्या राय है?

उन्होंने तो आज्ञा दे दी है
मुझे ये छोड़ के जायेंगे भी कैसे। लौट कर अवश्य चले आयेंगे। वेष ही तो बना रहे हैं, कोई सचमुच के मुनि थोड़े ही बन रहे हैं
जैसा आप उचित समझें करें
रात्रि में ... ब्रह्मगुलाल लेटे हैं, सोच रहे हैं ...
यह संसार, शरीर, भोग सब क्षणभंगुर हैं, विनाशीक हैं। जीव अकेला आता है, अकेला जाता है, अकेला ही सुख दुख भोगता है। कोई किसी का संगी साथी नहीं। मुनि दीक्षा लेकर आत्मकल्याण करने में अब देरकरने से कोई लाभ नहीं। सोच विचार कैसा। अवसर भी अच्छा मिल गया है, क्यों न इसका पूरा-पूरा लाभ उठाऊं। बस अब यह मेरा अन्तिम रूप ही होगा। अब देर क्यों?
प्रात: काल स्नान आदि करके ब्रह्मगुलाल मन्दिर जी गये, भगवान को नमस्कार किया, पूजा की, स्तुति की ...

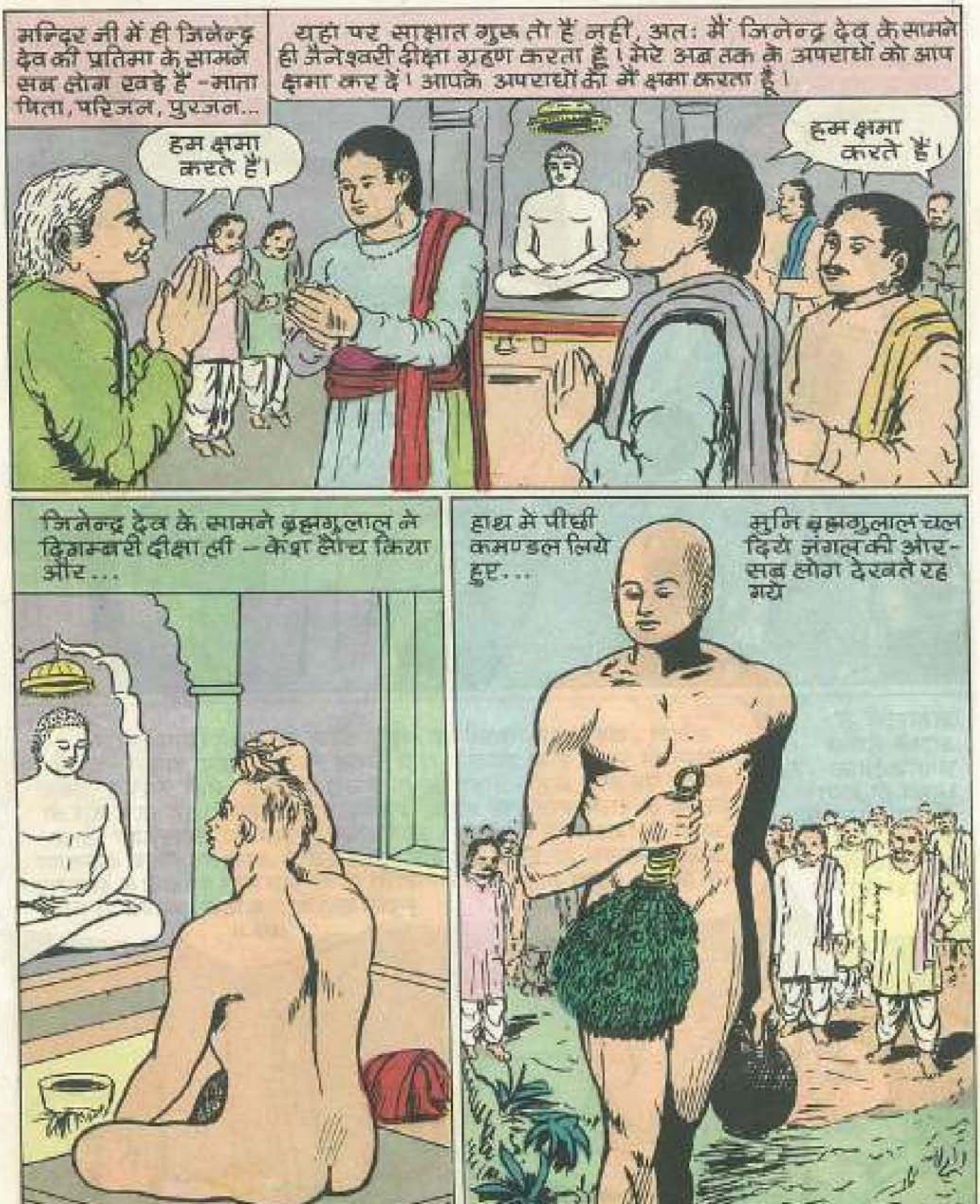
मन्दिर जी में ही जिनेन्द्र देव की प्रतिमा के सामने सब लोग खड़े हैं -माता पिता, परिजन, पुरजन...
यहां पर साक्षात गुरू तो हैं नहीं, अतः मैं जिनेन्द्र देव के सामने ही जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करता हूं। मेरे अब तक के अपराधों को आप क्षमा कर दें। आपके अपराधों को मैं क्षमा करता हूं।
हम क्षमा करते हैं।
हम क्षमा करते हैं।
जिनेन्द्र देव के सामने ब्रह्मगुलाल ने दिगम्बरी दीक्षा ली - केश लौंच किया और...
हाथ में पीछी कमण्डल लिये हुए...
मुनि ब्रह्मगुलाल चल दिये जंगल की ओर- सब लोग देखते रह गये

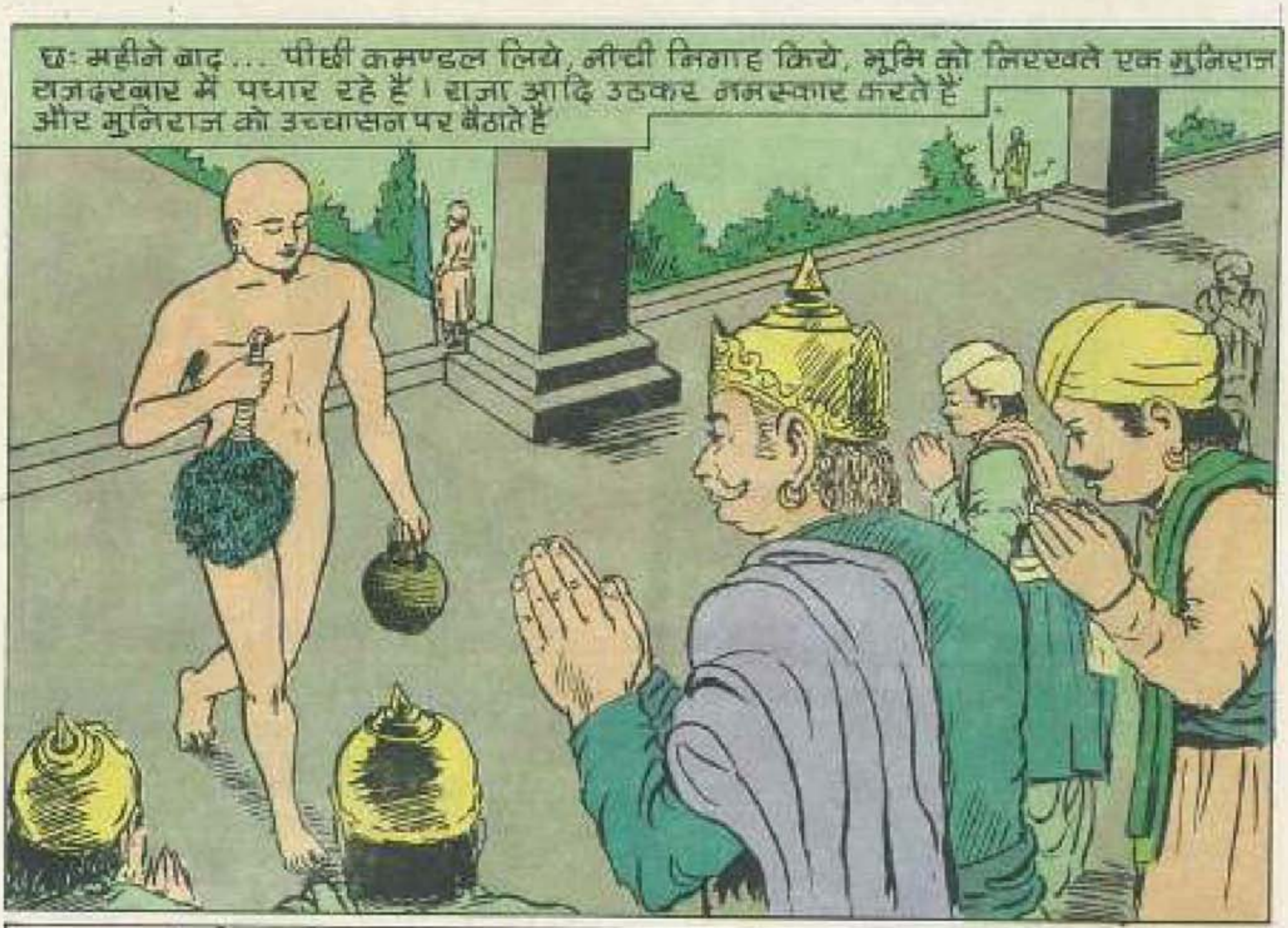
छः महीने बाद ... पीछी कमण्डल लिये, नीची निगाह किये, भूमि को निरखते एक मुनिराज राजदरबार में पधार रहे हैं। राजा आदि उठकर नमस्कार करते हैं और मुनिराज को उच्चासन पर बैठाते हैं

महाराज मैं आपके दर्शन पाकर आज धन्य हो गया। मैं पुत्र शोक से संतप्त हूँ। कृपया मुझे शांति का उपदेश दीजिये
राजन, यहां कोई किसी का नहीं। कौन किसका पिता, कौन किसका पुत्र। सब आकर यहा मिल जाते हैं और अपने-अपने समय पर सब जहां-जहां जिसे जाना होता है चले जाते है। फिर किसी के चले जाने पर शोक क्यों? शान्त हो जाओ राजन। जो आया है नियम से जायेगा। जो मिला है अवश्य बिछुड़ेगा। जब वस्तु स्वरूप ही ऐसा है फिर दुख क्यों? अब तो आत्म कल्याण में लगो। सुना नहीं आपने "राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार। मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार॥

महाराज, आपने मेरी आंखे खोल दी। मेरा हृदय अब शांत हो गया। मैं आपसे अति प्रसन्न हूं। आपकी कला की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। जो चाहो मेरे से मांग लो और यहां प्रसन्नता से रहो।
राजन्, मुझे वह मिल गया जिसे पाकर अब किसी चीज़ की भी इच्छा नहीं रही। अब तो मैं बंधन मुक्त हूं और रहूंगा, क्या रखा है इन सब में

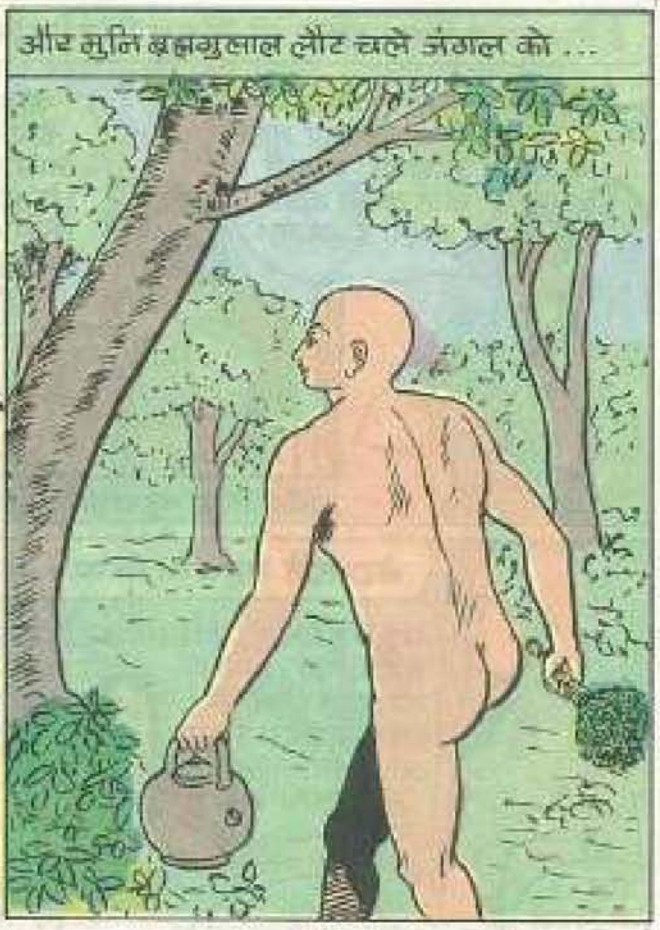
और मुनि ब्रह्मगुलाल लौट चले जंगल को ...

और इधर ब्रह्मगुलाल के घर में...
यह क्या गजब हो गया – मेरे पुत्र ने यह क्या कर डाला, अब हमारा क्या होगा
बड़ा निष्ठुर निकला मेरा लाल। मैं क्या करूं, मैं तो लुट गई। आप ही करो न कुछ। चलो उसे समझा बुझा कर वापिस लौटा लावें
पिता जी, मेरी तो सारी जिन्दगी पड़ी है, कैसे कटेगी यह। पति होते हुए भी मैं तो विधवा हो गई। आप ही उन्हें समझा कर वापिस ला सकते हैं। चलो ना।

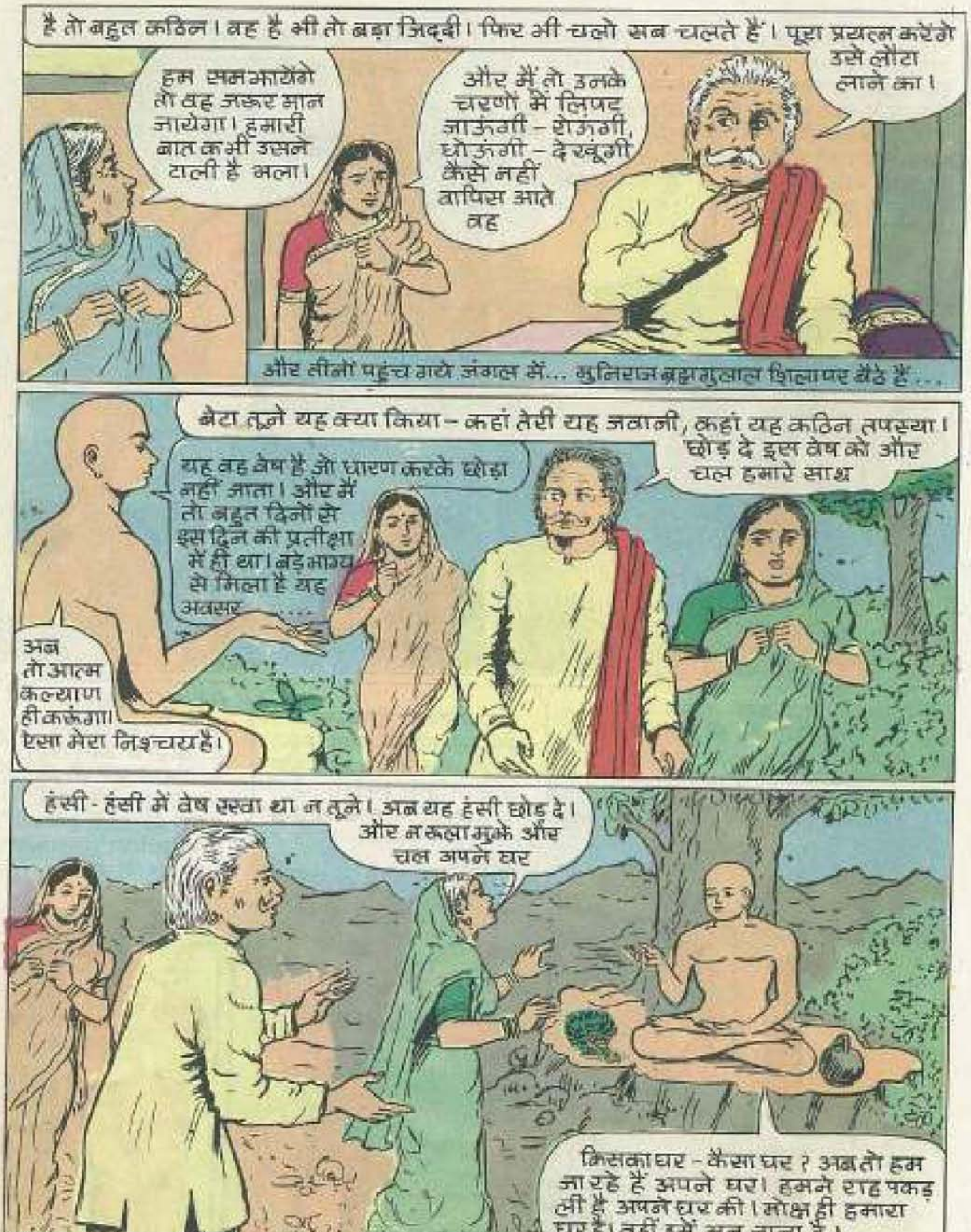
है तो बहुत कठिन। वह है भी तो बड़ा जिद्दी। फिर भी चलो सब चलते हैं। पूरा प्रयत्न करेंगे उसे लौटा लाने का।
हम समझायेंगे तो वह जरूर मान जायेगा। हमारी बात कभी उसने टाली है भला।
और मैं तो उनके चरणों में लिपट जाऊंगी - रोऊंगी, धोऊंगी - देखूंगी कैसे नहीं वापिस आते वह
और तीनों पहुंच गये जंगल में... मुनिराज ब्रह्मगुलाल शिला पर बैठे हैं...
बेटा तूने यह क्या किया - कहां तेरी यह जवानी, कहां यह कठिन तपस्या। छोड़ दे इस वेष को और चल हमारे साथ
यह वह वेष है जो धारण करके छोड़ा नहीं जाता। और मैं तो बहुत दिनों से इस दिन की प्रतीक्षा में ही था। बड़े भाग्य से मिला है यह अवसर.....
अब तो आत्म कल्याण ही करूंगा। ऐसा मेरा निश्चय है।
हंसी-हंसी में वेष रखा था न तूने। अब यह हंसी छोड़ दे।
और न रूला मुझे और चल अपने घर
किसका घर - कैसा घर? अब तो हम जा रहे हैं अपने घर। हमने राह पकड़ ली है अपने घर की। मोक्ष ही हमारा घर है। वहीं हमें अब जाना है।

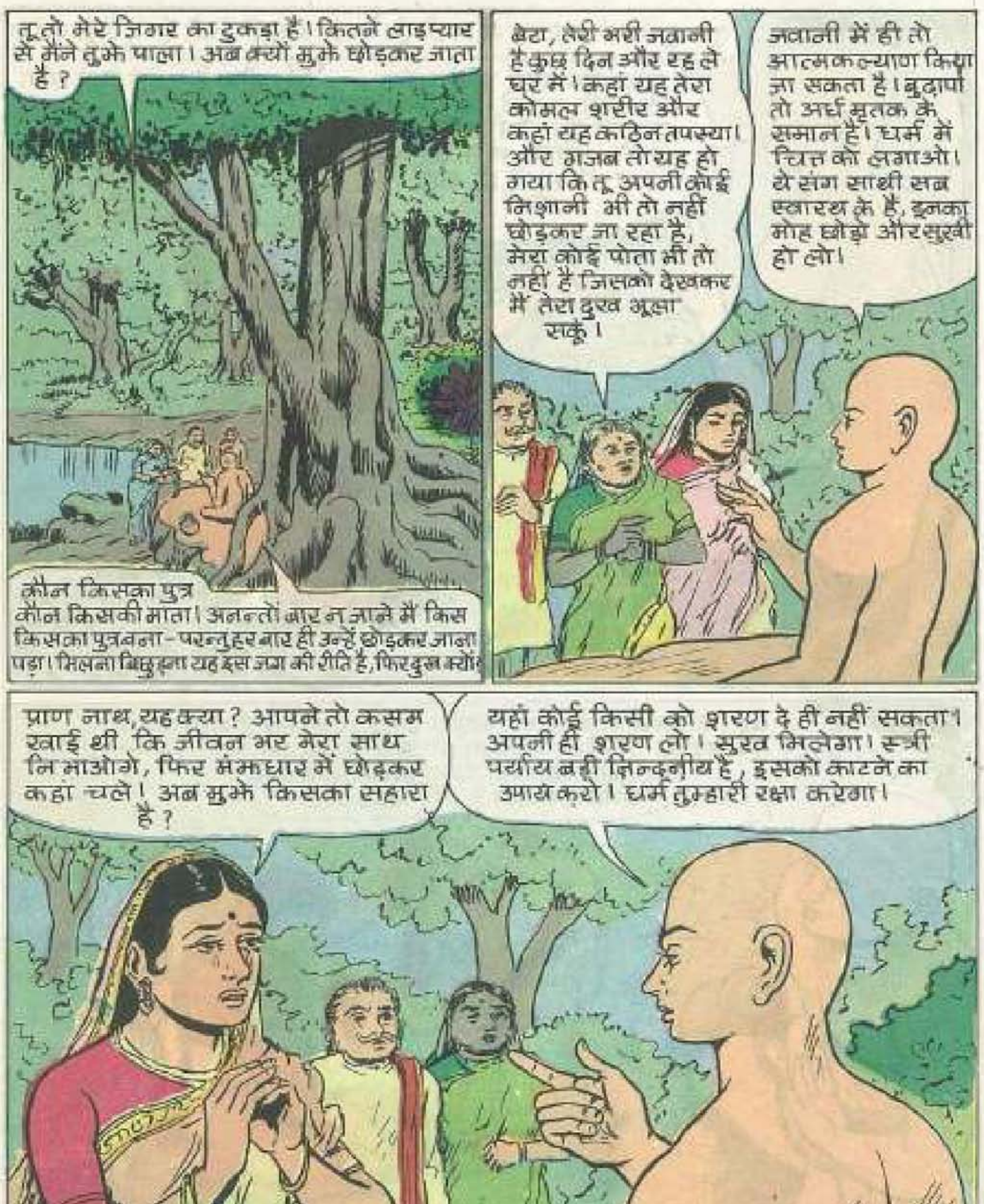
तू तो मेरे जिगर का टुकड़ा है। कितने लाड़प्यार से मैंने तुझे पाला। अब क्यों मुझे छोड़कर जाता है ?
कौन किसका पुत्र कौन किसकी माता। अनन्तों बार न जाने मैं किस किसका पुत्र बना - परन्तु हर बार ही उन्हें छोड़कर जाना पड़ा। मिलना बिछुड़ना यह इस जग की रीति है, फिर दुख क्यों?
बेटा, तेरी भरी जवानी है कुछ दिन और रह ले घर में। कहां यह तेरा कोमल शरीर और कहां यह कठिन तपस्या। और गजब तो यह हो गया कि तू अपनी कोई निशानी भी तो नहीं छोड़कर जा रहा है, मेरा कोई पोता भी तो नहीं है जिसको देखकर मैं तेरा दुख भूला सकूं।
जवानी में ही तो आत्मकल्याण किया जा सकता है। बुढ़ापा तो अर्ध मृतक के समान है। धर्म में चित्त को लगाओ। ये संग साथी सब स्वारथ के हैं, इनका मोह छोड़ो और सुखी हो लो।
प्राण नाथ, यह क्या ? आपने तो कसम खाई थी कि जीवन भर मेरा साथ निभाओगे, फिर मंझधार में छोड़कर कहां चले! अब मुझे किसका सहारा है ?
यहां कोई किसी को शरण दे ही नहीं सकता। अपनी ही शरण लो। सुख मिलेगा। स्त्री पर्याय बड़ी निन्दनीय है, इसको काटने का उपाय करो। धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा।

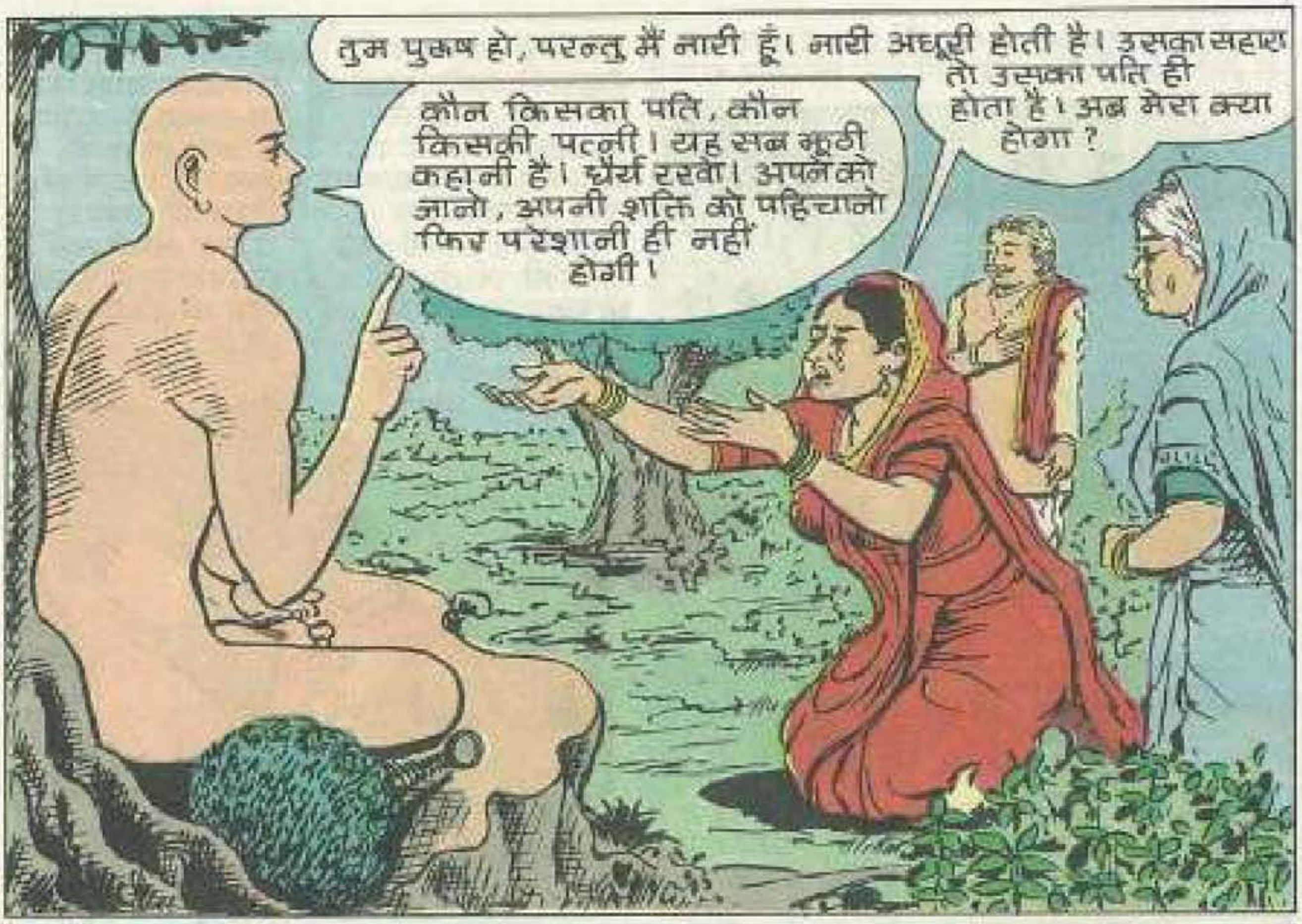
तुम पुरुष हो, परन्तु मैं नारी हूँ। नारी अधूरी होती है। उसका सहारा तो उसका पति ही होता है। अब मेरा क्या होगा ?
कौन किसका पति, कौन किसकी पत्नी। यह सब झूठी कहानी है। धैर्य रखो। अपने को जानो, अपनी शक्ति को पहिचानो फिर परेशानी ही नहीं होगी।

बहू, ये हमसे मानने वाले नहीं। इनका एक मित्र है मथुरामल। तुम उसकी पत्नी के पास जाओ और उससे कहकर मथुरामल को यहां लिवा लाओ, वही इन्हें समझा सकता है और कोई नहीं
अच्छा पिता जी

छुमगुलाल की पत्नी पहुँची मथुरामल की पत्नी के पास और...
बहिन सुना तुमने, वे तो घर छोड़ कर चले गये। मैं क्या करूं। इस बुरे समय में तुम ही मेरी सहायता कर सकती हो।
बहिन, मुझे सब कुछ मालूम है। मुझे तुमसे पूरी हमदर्दी है। बोलो मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूँ?
यह तो तुम्हें मालूम ही है कि तुम्हारे पति उनके बचपन के दोस्त हैं। तुम उन्हें उनके पास भेज दो। वह उन्हें समझा बुझा कर अवश्य ही घर लौटा लायेंगे।
ठीक है, मैं इनसे कहकर इन्हें तुम्हारे पति के पास अवश्य ही भेजूंगी

मथुरामल की पत्नी पहुँची अपने पति के पास और ...
सुनो जी, कल ब्रह्मगुलाल की पत्नी आई थी। बहुत दुखी है बेचारी। कहती थी तुम्हीं उसके पति को समझा सकते हो।
ठीक है, वह मेरा मित्र है परन्तु क्या तुम नहीं जानती कि जो वेष वह धारण करता है उस रूप ही वह हो जाता है।
अब मुनि उसका वेष ही नहीं है, अब तो वह भाव से भी मुनि बन गया है वास्तव में वह मुनि बन गया है।
ठीक है, परन्तु कुछ न कुछ तो करना ही होगा, वरना उनकी पत्नी तड़फ-तड़फ कर जान दे देगी एक बार कोशिश करके देखो तो
तुम कहती हो तो चला जाता हूँ। और हाँ यह प्रतिज्ञा भी करता हूँ कि उसको लेकर ही घर लौटूंगा वरना नहीं
मथुरामल पहुँच गये मुनि ब्रह्मगुलाल के पास..
यह तुमने क्या किया मेरे दोस्त! क्या यह अवस्था जोग धारण करने की थी। अभी तो तुमने भोग भोगे भी नहीं और उन्हें छोड़ने की ठान ली। जरा अपनी पत्नी का तो ख्याल किया होता
भोग ... हः हः हः
"भोग बुरे भव रोग बढ़ावें, बैरी हैं जग जी के।
बेरस होय विपाक समय अति, सेवत लागे नीके॥
वज्र अगिनि विष से विषधर से,
ये अधिके दुखदाई।
धर्म रतन के चोर चपल अति,
दुर्गति पन्थ सहाई॥"

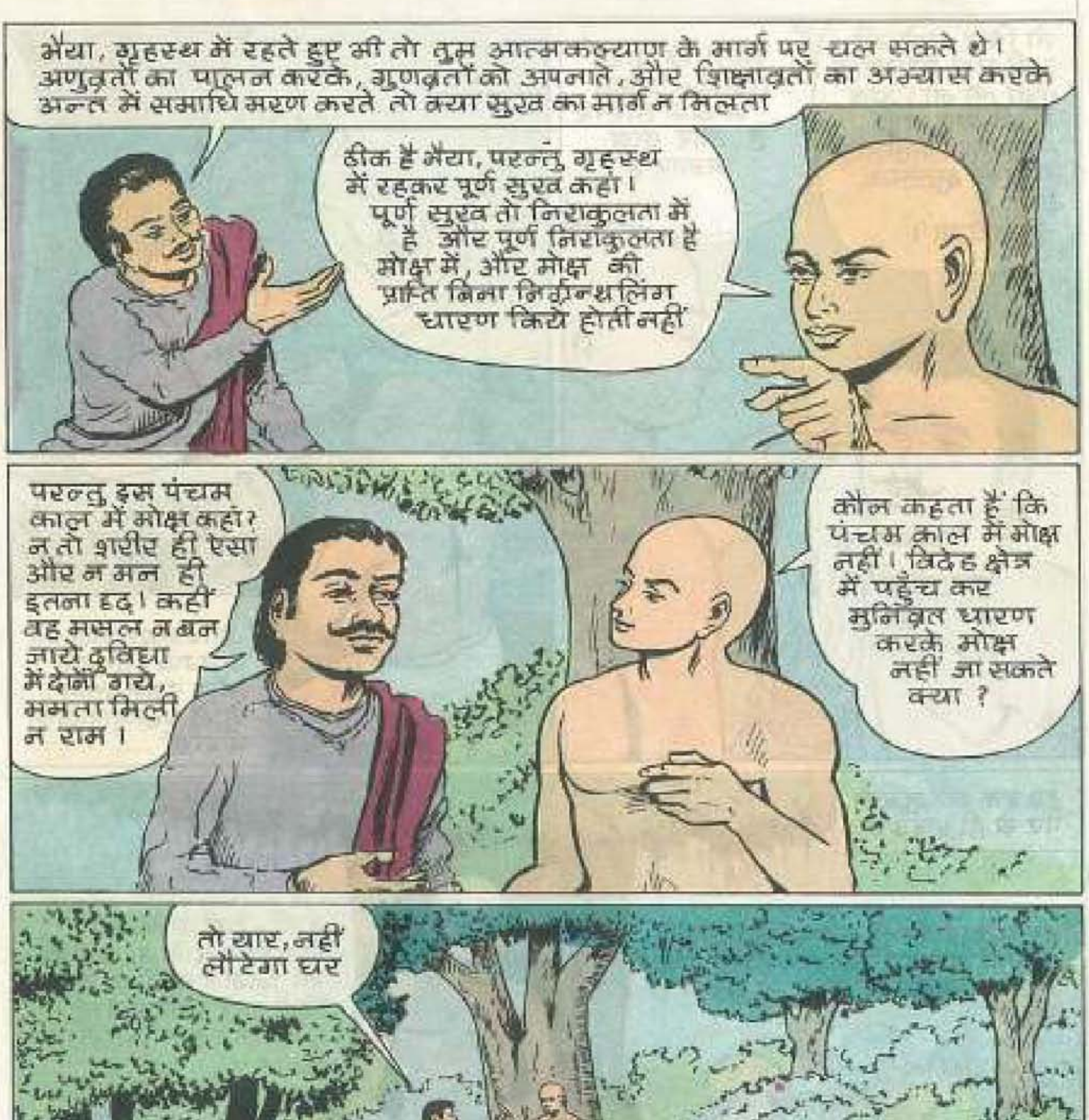
भैया, गृहस्थ में रहते हुए भी तो तुम आत्मकल्याण के मार्ग पर चल सकते थे। अणुव्रतों का पालन करके, गुणव्रतों को अपनाते, और शिक्षाव्रतों का अभ्यास करके अन्त में समाधि मरण करते तो क्या सुख का मार्ग न मिलता
ठीक है भैया, परन्तु गृहस्थ में रहकर पूर्ण सुख कहां। पूर्ण सुख तो निराकुलता में है और पूर्ण निराकुलता है मोक्ष में, और मोक्ष की प्राप्ति बिना निर्ग्रन्थलिंग धारण किये होती नहीं
परन्तु इस पंचम काल में मोक्ष कहां? न तो शरीर ही ऐसा और न मन ही इतना दृढ़। कहीं वह मसल न बन जाये दुविधा में दोनों गये, ममता मिली न राम।
कौन कहता है कि पंचम काल में मोक्ष नहीं। विदेह क्षेत्र में पहुँच कर मुनिव्रत धारण करके मोक्ष नहीं जा सकते क्या ?
तो यार, नहीं लौटेगा घर
नहीं, हरगिज नहीं, दृढ़ निश्चय है यह मेरा

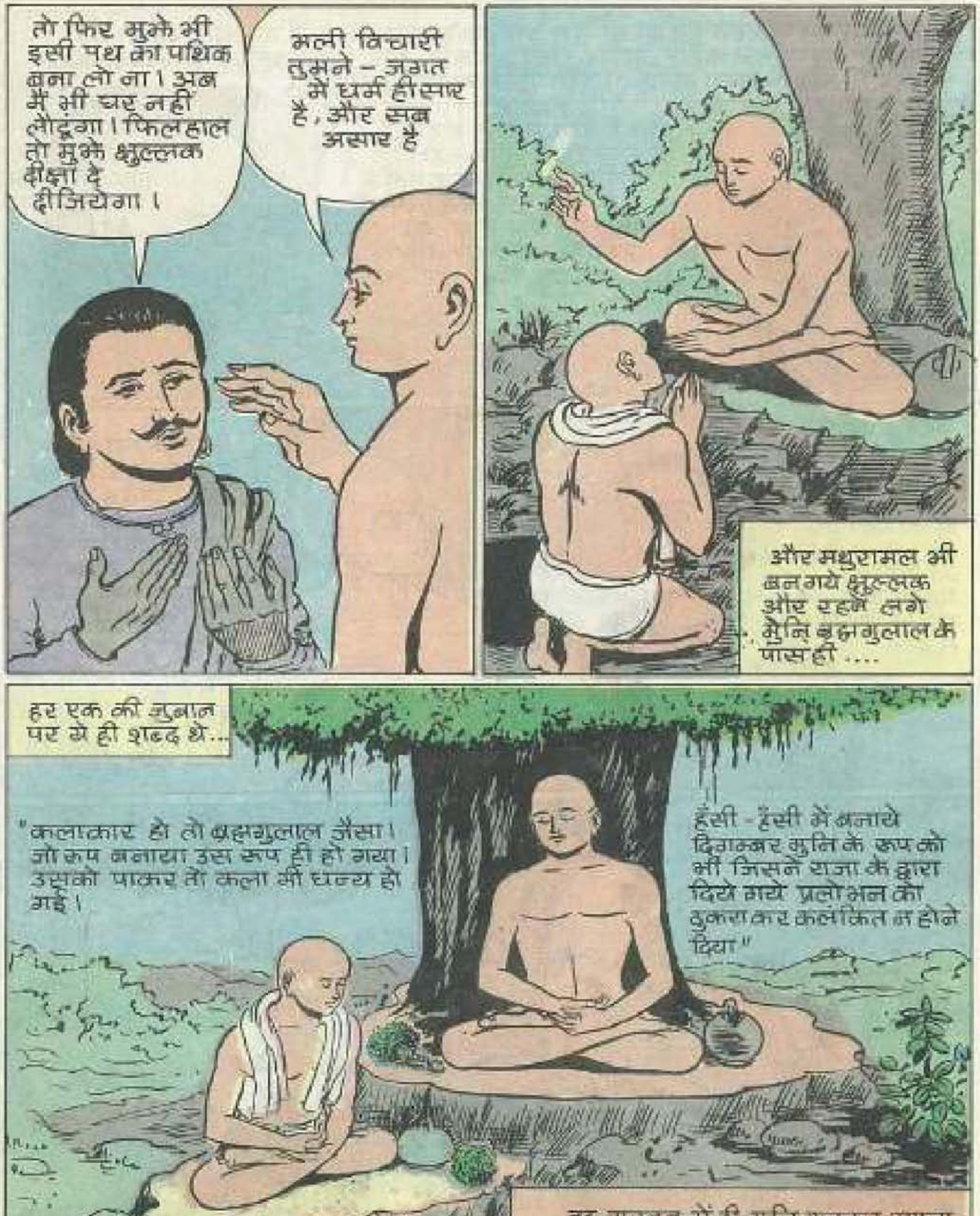
तो फिर मुझे भी इसी पथ का पथिक बना लो ना। अब मैं भी घर नहीं लौटूंगा। फिलहाल तो मुझे क्षुल्लक दीक्षा दे दीजियेगा।
भली विचारी तुमने – जगत में धर्म ही सार है, और सब असार है
और मथुरामल भी बन गये क्षुल्लक और रहने लगे मुनि बहुगुलाल के पास ही ....
हर एक की जुबान पर ये ही शब्द थे...
"कलाकार हो तो बहुगुलाल जैसा। जो रूप बनाया उस रूप ही हो गया। उसको पाकर तो कला भी धन्य हो गई।
हँसी - हँसी में बनाये दिगम्बर मुनि के रूप को भी जिसने राजा के द्वारा दिये गये प्रलोभन को ठुकरा कर कलंकित न होने दिया"
वह वास्तव में ही मुनि बनकर अपना आत्म कल्याण कर गया।

सम्पादकीय : रूप जो बदला नहीं

फिरोजाबाद के समीप चन्द्रवार नामक स्थान की घटना है, कि पद्मावती जाति में ब्रह्मगुलाल नामक प्रसिद्ध व्यक्ति ने १६ वीं १७ वीं शताब्दी में जन्म लिया। माता पिता का दुलार, परिवार एवं मित्रों का स्नेह प्राप्त कर आनंद से रहते थे। आपने ग्वालियर के भट्टारक स्वस्ति श्री जगभूषण जी के समीप में रह कर धर्मशास्त्र, गणित, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छन्द अलंकार एवं संगीत की शिक्षा अल्प काल में प्राप्त की। विद्या के साथ विनयगुण, पात्रता, धार्मिक वृत्ति आदि सद्गुणों का समावेश लघु उम्र में प्राप्त कर लिया। संगीत में विशेष रुचि होने से लावनी, शेर चौपाई, दोहे आदि सुनने सुनाने का चाव था। आपने युवा अवस्था में ही वीर, श्रृंगार हास्य रस से युक्त रचनाओं के साथ रामलीला, रासलीला नाटक एवं स्वांग भरने, नृत्य कला तथा तद्रूप आचरण दिखाने की प्रवृत्ति से माता पिता तथा परिवार के सभी सदस्य बहुत दुखी थे। अनेक हितैषियों के समझाने एवं मना करने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तथा मना करने पर वे त्योहारों, बसंतोत्सव, एवं मेलों आदि में बढ़चढ़ के भाग ले कर लोगों का मनोरंजन करते। नृत्य कला की प्रसिद्धि से चारों ओर सम्मान के साथ आपकी प्रतिष्ठा बढ़ी तथा आपकी ख्याति राज दरबार तक पहुंची किंतु प्रधान मंत्री को ईर्ष्या हुई। कीर्ति को कम करने की दृष्टि से गंभीर षड्यंत्र रचा तथा राजकुमार को उकसाकर कहा कि ब्रह्मगुलाल से कहो कि वह सिंह का स्वांग करें। ब्रह्मगुलाल ने स्वीकार तो किया किंतु विनय पूर्वक महाराज से निवेदन किया कि इस स्वांग में कोई भूल-चूक हो जाये तो मुझे क्षमा किया जाए। राजा ने स्वीकृति दे दी। राजनीति के चतुर खिलाड़ी की चाल सफल हो रही थी वह सोच रहा था कि यह श्रावक कुल में जन्मा है तथा अहिंसा, दया, जीव रक्षा की शिक्षा बाल्य काल से दी गई है सिंह स्वांग के अभिनय मे उसके लिए ऐसा अवसर आना चाहिए जिससे इसकी परीक्षा जीव बध से की जाये यदि जीव बध करेगा तो यह श्रावक पद से रहित हो जायेगा और जीव हिंसा नहीं करेगा तो अपयश होगा। कलाकार ब्रह्मगुलाल ने सिंह का रूप बनाया तथा दहाड़ते हुए राजसभा में पहुंचे। वहां पर बकरी देखी तो स्वांगवृत्ति धारक ब्रह्मगुलाल कुछ सोच ही रहे थे कि राजकुमार ने कहा :

"सिंह नहीं तू स्यार है, मारत नाहि शिकार।
वृथा जनम जननी दियो जीवन को धिक्कार।।"

अपमान के शब्द सुनते ही ब्रह्मगुलाल की आत्मा विक्षुब्ध हो गई। बकरी पर से ध्यान हटा। क्रोधावेश में उछाल मारी तथा राजकुमार के गाल पर जोरदार झप्पटा मारा। राजकुमार घायल होकर बेसुध गिर पड़ा। घातक हमले से राजकुमार के प्राण पखेरू उड़ गये।

राजा को पुत्र वियोग का दुःख बैचेन कर रहा था। मंत्री ने राजा को पुनः सलाह दी कि ब्रह्मगुलाल को आदेश दें कि दिगम्बर मुनि बन कर शोकाकुल परिवार को शान्ति का उपदेश दें। ब्रह्मगुलाल ने दिगम्बर मुनि का रूप धारण कर संसार की असारता का उपदेश दिया राजा को आत्म शान्ति की दिशा दिखाई तथा राजा ने मुनि भेष धारी ब्रह्मगुलाल से कहा कि आप जो भी मांगना चाहो मांगो परंतु दिगम्बर मुनि ने कुछ नहीं मांगा तथा अपनी पिच्छी कमंडलु ले कर चार हाथ भूमि शोधन करते हुए वन में चले गये। ब्रह्मगुलाल के मित्र मथुरा मल जी उनको समझाने गये तब मुनि श्री ने मथुरा मल से कहा कि यह जो स्वांग भरा है यह एक ही बार धारण किया जाता है संसार की असारता को समझ कर मित्र मथुरा मल ने भी दीक्षा ले ली। यही दिगम्बर मुनि का सही रूप है।

ब्र. धर्म चंद शास्त्री
प्रतिष्ठाचार्य ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक :	आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला गोधा सदन अलसीसर हाउस संसार चंद रोड, जयपुर
सम्पादक :	धर्म चंद शास्त्री
लेखक :	डा. मूलचंद जैन मुजफ्फरनगर संसार चंद रोड
चित्रकार :	बनेसिंह
दिल्ली कार्यालय :	श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर धु. राजमति आश्रम गुलाब वाटिका–दिल्ली सहारनपुर रोड-दिल्ली

प्रकाशन वर्ष-१९८९-अप्रैल वर्ष २ अंक १६ मूल्य ६.०० रु.

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक तथा सम्पादक धर्मचंद शास्त्री द्वारा
जयली प्रेस से छपकर धर्मचंद शास्त्री ने गोधा सदन अलसीसर हाउस संसार चंद रोड जयपुर से प्रकाशित की।

Printed by: Shakun Printers, 3625, Subhash Marg, New Delhi-2. Phone: 271818.

डाक पंजीयन—आर. जे. 2920

भावी पीढ़ी के आचार-विचार एवम् सदाचार का सुसंस्कृत नव निर्माण में आप अपना सहयोग प्रदान करें।

मनो विनोद और ज्ञान वर्धन का उपयुक्त साधन जैन संस्कृति, इतिहास तथा महावीर की वाणी को जनजन तक पहुंचाने के लिए जैन कथाओं पर आधारित

जैन चित्रकथा

सम्पादक· धर्मचन्द शास्त्री